

Vol 3 Issue 2 March 2013

Impact Factor : 0.2105

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

*Indian Streams
Research Journal*

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2230-7850

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya [Malaysia]	Catalina Neculai University of Coventry, UK	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Horia Patrascu Spiru Haret University, Bucharest, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus Pop	George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher	Nawab Ali Khan College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University, Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust),Meerut	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra
	Sonal Singh	

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net**



प्राकृतिक संसाधनों पर रासायनिक अवयवों के दुष्प्रभाव – पिथमपुर के विशेष संदर्भ में

शिल्पी वर्मा,

सहायक प्राध्यापक
शासकीय कृ.पे.स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवास

सारांश:

प्राकृतिक संसाधन प्रकृति प्रदत्त है। मानव तथा संसाधनों का अन्योन्याश्रित संबंध होता है। कोई भी वस्तु पदार्थ या तत्व उसी समय संसाधन माना जाता है जब उसमें मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति अथवा लाभ प्रदान करने की क्षमता हो।

समान्यतः भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि आधारित अर्थव्यवस्था मानी जाती रही है। परन्तु वर्ष 1981 के दशक से सरकार ने औद्योगिक विकास को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया है। सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योग शुरू करने हेतु कई सुविधाएँ तथा ऋण भी प्रदान किए गए हैं जिससे औद्योगिक विकास तीव्र गति से हुआ है। परन्तु इस विकास की दौड़ ने कई पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा की हैं।

प्राकृतिक संसाधन के अविवेकपूर्ण तथा अनुचित प्रयोग होने से उनकी गुणवत्ता में कमी आ रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि संसाधनों का सदुपयोग किया जाए। संसाधनों का नियोजित तथा संरक्षित उपयोग हो जिससे भावी पीढ़ियों के लिए भी संसाधन सतत् रूप से मिलते रहे।

अध्ययन का उद्देश्य

पिथमपुर में औद्योगिक विकास का ऐतिहासिक अध्ययन करना।
औद्योगिक विकास से निकले रासायनिक अवयवों का प्राकृतिक संसाधनों पर दुष्प्रभाव अध्ययन।
प्राकृतिक संसाधनों के अवनयन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र हेतु मध्यप्रदेश के धार जिले में स्थित पिथमपुर औद्योगिक क्षेत्र का चयन किया गया है। जो एशिया का प्रथम सबसे बड़ा औद्योगिक क्षेत्र है।

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।

स्थिति एवं विस्तार

पिथमपुर औद्योगिक क्षेत्र 22°36' से 22°44' उत्तर तथा 75°25' से 75°45' पूर्व में अवस्थित है। यह बम्बई-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। पिथमपुर से महु शहर 8 किलोमीटर तथा इन्दौर 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।



Title : प्राकृतिक संसाधनों पर रासायनिक अवयवों के दुष्प्रभाव – पिथमपुर के विशेष संदर्भ में
Source: Indian Streams Research Journal [2230-7850] शिल्पी वर्मा, yr:2013 vol:3 iss:2

जनसंख्या एवं क्षेत्रफल

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार पिथमपुर की कुल जनसंख्या 1,26,099 है जिसमें 58: पुरुष तथा 42: महिलाएं हैं। पिथमपुर में औसत साक्षरता दर 62: जो भारत की साक्षरता दर 59.5 : से अधिक है। जिसमें पुरुष साक्षरता 73: तथा महिला साक्षरता 47: है। पिथमपुर का क्षेत्रफल 75.51 वर्ग किलोमीटर है। पिथमपुर में गाड़ियों तथा उनके पुर्जे बनाने वाले उद्योगों की प्रधानता है इसलिए इसे आटोमोबाइल सिटी भी कहा जाता है।

ओद्योगिक विकास

पिथमपुर में यद्यपि ओद्योगिक विकास ओद्योगिक केन्द्र विकास निगम द्वारा प्रारंभ में नियोजित ढंग से किया गया था। परन्तु धीरे-धीरे यहाँ उद्योगों की स्थापना अत्यंत बेतरतीब ढंग से होने लगी।

भारत सरकार द्वारा योजना के तहत मध्यप्रदेश के 18 जिलों से ऐसे पिछड़े क्षेत्रों को ओद्योगिक विकास हेतु चुना गया जहां ओद्योगिक विकास की पर्याप्त संभावनाएं थी।

1. धार जिले में पिथमपुर ओद्योगिक क्षेत्र।
2. झाबुआ जिले में मेघना ओद्योगिक क्षेत्र।
3. शाजापुर जिले में मक्सी ओद्योगिक क्षेत्र।
4. देवास जिले में सेक्टर-3 ओद्योगिक क्षेत्र।
5. इन्दौर जिले में सोनवाए-भैसलाए ओद्योगिक क्षेत्र।

पिथमपुर ओद्योगिक क्षेत्र

वर्ष 1981 से पहले यह एक छोटा ग्रामीण क्षेत्र था जिसमें बंजर भूमि की अधिकता थी। परन्तु आज यह मध्यप्रदेश का सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा संचालित प्रसिद्ध ओद्योगिक क्षेत्र बन गया है। प्रारंभिक अवस्था में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा 1960.289 हेक्टेयर भूमि ओद्योगिक केन्द्र विकास निगम पिथमपुर को दी गई थी।

तालिका 1.1 पिथमपुर में उद्योगों का विकास

वर्ष	कुल उद्योग	वर्ष	कुल उद्योग
1981-82	07	1989-90	397
1982-83	15	1990-91	460
1983-84	22	1991-92	550
1984-85	46	1992-93	636
1985-86	82	1993-94	690
1986-87	145	1994-95	737
1987-88	247	1995-96	752
1988-89	322	2000-2001	N.A.

उपरोक्त तालिका पिथमपुर में उद्योगों के तीव्र विकास को दर्शाती है। वर्ष 1981 में पिथमपुर में मात्र 7 उद्योग थे दस साल में ही यह आंकड़ा 550 तक पहुँच गया तथा 1996 में उद्योगों की संख्या 752 हो गई जो वर्ष 1981 से 100 गुना अधिक है।

रासायनिक अवयवों का प्राकृतिक संसाधनों पर प्रभाव

पिथमपुर में उद्योगों का विकास तो तीव्र गति से हुआ है परन्तु विकास की इस दौड़ में उद्योगों के मालिकों ने सिर्फ अपने लाभ को ध्यान में रखा पर्यावरण संरक्षण की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया जिससे उद्योगों ने निश्चित ही प्राकृतिक संसाधनों को प्रभावित किया है। पर्यावरण प्रदूषण बोर्ड की यह जिम्मेदारी है कि वे इस बात का ध्यान रखें कि उद्योगों द्वारा पर्यावरणीय संसाधनों को क्षति न पहुंचे। परन्तु प्राकृतिक संसाधन भ्रष्टाचार की बलि चढ़ रहे हैं।

मात्र 100 में 35 प्रतिशत उद्योग ऐसे हैं जो ओद्योगिक अवसंरचना जैसे एफ.टी.पी. प्लांट एवं इनिसीएटर आदि की सुविधा रखते हैं। जबकि 65 प्रतिशत उद्योगों में इसका अभाव है। अधिकांश उद्योगों द्वारा पानी बिना शोधन किए ऐसे ही बहा दिया जाता है जो स्थानीय अपवाह तथा नदियों में मिल जाता है। अतः उद्योगों से निकलने वाले रासायनिक अवयवों ने पर्यावरण प्रदूषण की निम्नलिखित समस्याएँ पैदा कर दी हैं।

पीने का पानी रासायनिक अवयवों के मिलने से प्रदूषित हो रहा है।

पानी में क्षारीयता की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हो रही है।

भूमिगत जल की गुणवत्ता में भी कमी आ रही है।

वायु प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो रही है जिसमें गैसीय प्रदूषकों की मात्रा अधिक है। उद्योगों के पास स्थित कृषि क्षेत्र की भूमि का भी अवनयन हो रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों के अवनयन का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्राकृतिक संसाधनों के अवनयन का मानव स्वास्थ्य पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ रहा है:

दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित खबर के अनुसार 25 अक्टूबर 2012 को सागोर सोप फेक्टरी कालोनी के 86 मजदूर बिमार पड़ गए थे जबकि सेक्टर तीन के एक मजदूर की मौत हो गई थी।

RSPL लिमिटेड के मजदूर जो घड़ी डिटरजेन्ट बनाने का कार्य थे वह भी दूषित जल पीने से बिमार पड़ गए थे जिनमें से अधिकांश को पीलिया तथा डाइरिया की शिकायत है। मजदूरों ने साक्षात्कार के दौरान बताया कि उन्हें स्थानीय टैंक से पानी दिया जाता है जिसे उसी क्षेत्र में स्थित बोरिंग से भरा जाता है परन्तु 5 अक्टूबर को पानी बहुत गंदा आया था। जिसकी शिकायत इन मजदूरों द्वारा तहसीलदार तथा जिला पंचायत अधिकारियों से की गई थी। अधिकारियों द्वारा वहाँ पहुँच कर जाँच के दौरान पाया गया कि सागोर क्षेत्र का भूमिगत जल अत्यधिक प्रदूषित हो चुका है।

आए दिन दैनिक समाचार पत्रों में प्रदूषित जल से मनुष्य व जानवरों के मरने की खबरे प्रकाशित होती रहती हैं। 11 नवम्बर वर्ष 2008 के दैनिक भास्कर के अनुसार 15 जानवरों की मौत सेक्टर तीन में स्थित सिल्वर आर्क कम्पनी द्वारा छोड़े गए प्रदूषित जल को पीने से हो गई थी। वायु प्रदूषण के कारण सिर दर्द, आँखों में जलन, जुकाम, खासी तथा एलर्जी की शिकायत अधिकांश लोगों द्वारा की जाती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

पिथमपुर औद्योगिक क्षेत्र, जो कभी एक प्रदूषण रहित गाँव हुआ करता था वहाँ प्रदूषण की समस्या विकराल रूप लेती जा रही है। इसका अभिप्राय यह कतई नहीं है कि औद्योगिक विकास रोक दिया जाए। परन्तु यह अवश्य तय किया जाना चाहिए कि पर्यावरण को ताक पर रखकर औद्योगिक विकास न किया जाए। वरन् उसके संरक्षण का विशेष ध्यान रखा जाए।

सुझाव

कागज पर दर्शाएँ गए नियमों का सख्ती से पालन किया जाए। भ्रष्ट अफसरों के खिलाफ सख्ती से कार्यवाही की जाए। स्थानीय जनता को जागरूक बनाया जाए। जिससे पर्यावरण संरक्षण में उनकी सहभागिता भी बढ़ सकें। निरन्तर निरीक्षण किया जाए तथा आवासीय क्षेत्र में स्थित अमान्यता प्राप्त उद्योगों को प्रतिबंधित किया जाए। औद्योगिक अवसंरचना की पूर्ति न करने वाले उद्योगों के खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिए। उद्योगों से निकले अपशिष्ट तथा उनके निस्तारण पर विशेष निगरानी रखी जाए। बिना शोधन के प्रदूषित जल प्रवाहित करने पर उन उद्योगों के मालिकों के खिलाफ सख्त कार्यवाही तथा दण्ड दिया जाना चाहिए।

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- * International Scientific Journal Consortium Scientific
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net